





सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० رضي الله عنه



अश्फाक अहमद खां

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.
مكتبة الفهيم
مئوناتھ بھنجن یوپی

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रात गहरी हो चली थी। चारों तरफ तारीकी और खामोशी छाई हुई थी। सर्दी का मौसम था लोग अपने अपने बिस्तरों में दुबके नीद के मज़े ले रहे थे। गलियां और बाज़ार यूं सुनसान पड़े थे जैसे वहां से कभी किसी इंसान का गुज़र ही न हुआ हो। ऐसे में अचानक दो साए नमूदार हुए। वह तेज़ रफतारी से चल रहे थे। लेकिन चलते हुए भी वह अपने गिरदो पेश के माहौल सें बेनियाज़ नहीं थे। वह बहुत ध्यान और गौर से कुछ सुनने या देखने की कोशिश में थे। यूं लग रहा था जैसे उन्हे किसी खास चीज़ को सुनने या देखने की ख्वाहिश है।

चलते-चलते वह दोनों अचानक रूक गये। उन्हें आबादी से कुछ दूर आग की रौशनी नज़र आई।

''लगता है सर्दी और रात की वजह से यहां कोई काफिला ठहरा हुआ है'' इनमें से एक ने कहा।

''जी हां मेरे आका, शायद यह काफिला ही है'' दोसरे साए ने जो कि खादिम था अदब के साथ जवाब दिया।

तब आका ने कहा ''चलो मेरे साथ! शायद काफिले वालों को हमारी मदद की ज़रूरत हो।''

दोनों तकरीबन भागते हुए वहां पहुंचे, लेकिन वहां मन्ज़र ही कुछ और था। न काफिला था और न काफिले का कुछ सामान था। एक औरत अपने बच्चों के साथ बैठी हुई थी। आग पर एक हड़िया रखी

हुई थी। जब कि बच्चे बिलक बिलक कर रो रहे थे।

आका ने बड़े नर्म और एहतराम आमेज़ लहजे में कहा ''अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह''

उस औरत ने जवाब दिया ''वाअलैकुमुस्सलाम वरहमतुल्लाह''

आका ने पूछा ''मुअज़्ज़ज़ खातून! क्या बात है?''

औरत ने जवाब दिया ''रात और सर्दी ने आ घेरा है।''

औररत के इस जवाब से उनका दिल मुतमइन न हुआ, फिर दरयाफ्त किया ''ऐ बच्चे क्यों रो रहे हैं?''

औरत ने कदरे हिचकिचा कर बताया ''भूख की वजह से रो रहे हैं।''

भूख की वजह से रो रहे हैं? ''तो फिर हड़ियां में जो कुछ है उन्हें खिला दो।'' आका ने कहा।

औरत बोली! ''हड़ियां में तो महज़ पानी है, मैं तो उनको इसी तरह दिलासा देकर चुप करवाने की कोशिश कर रही हूं, ताकि थक कर यह खुद ही सो जाएं।''

आका का दिल यह सुन कर धक से रह गया। बच्चों के आंसू उनके दिल में छेद किए जा रहे थे। वह अपने खादिम से बोले!

''मेरे साथ चलो'' वह दोनों दौड़ते हुए वहां पहुंचे जहां आटा और खाने पीने का दूसरा सामान ज़खीरह किया हुआ था। आका ने आटा की एक बोरी निकाली और कुछ चर्बी और गोश्त निकाल कर

खादिम से कहाः

"यह सब मुझे उठवा दो"

खादिम ने हैरानी से आका की तरफ देखा। उसके होते हुए आका बोझ उठाएं, भला यह कैसे हो सकता था। उसने कहा।

"आका यह मैं उठा लेता हूं।"

आका ने फरमाया! "नहीं, बिल्कुल नहीं! क्या कयामत के रोज़ मेरे गुनाहों का बोझ तुम उठाओगे?"

इतना सुनते ही खादिम ने हुक्म की तामील की और सामान आका के कंधों पर रख दिया। उसके बाद दोनों फिर तेज़-तेज़ कदमों से चलने लगे। जब वह यह सामान लिए उस औरत के पास पहुंचे तो औरत शदीद हैरान हुई उसके तो वहम व गुमान में भी न था कि रात के इस पहर, इतनी सर्दी में कोई उनके ऐसी भी काम आ सकता है। आका ने अपने कंधों से सामान उतारा और कहा!

"तुम आटा गुंधो! मैं आग को दोबारा जलाने का इन्तेज़ाम करता हूं।" उनकी नज़रें बुझती हुई आग पर थीं।

हड़िया के नीचे लकड़ियां रख कर वह अपने मुंह से फूंके मारने लगे। धुआं उनकी आंखों में घुस रहा था। लेकिन वह आग जलाने में लगे रहे। गर्ज़ आका ने खाना तैयार करने में उस औरत की पूरी तरह मदद की। खाना पकने के बाद बच्चों ने सैर होकर खाया। खाने का बाकी सामान उनके पास छोड़ कर वह दोनों उठ खड़े हुए। तब उस औरत ने कहाः

"जज़ाकल्लाहो खैरन" अमीरूल मोमिनीन से ज़्यादा तुम इमारत के मुसतहिक हो।"

आका ने कहाः "तुम जब अमीरूल मोमिनीन के पास आओगी तो मैं इंशाअल्लाह वहां ही होउंगा।"

इतना कहकर आका अपने खादिम के साथ वहीं कुछ दूर बैठ गये। खादिम ने कहाः

"आका ये आप की शान नहीं।" यानी यूं ज़मीन पर इस तरह बैठ कर उनको देखना मुनासिब नहीं।

लेकिन आका ने कोई जवाब न दिया। चुनांचे खादिम भी खामोशी से एक तरफ बैठ गया।

बच्चे खाना खाने के बाद अब शेरारतें कर रहे थे। यूं ही हंसते खेलते वह नींद की आगोश में चले गए।

तब आका ने अपने खादिम से कहाः "तुम्हें पता है मैंने ऐसा क्यों किया है" यानी मैं यहां क्यों बैठ गया था।

उसने नफी में सर हिला कर कहाः "नहीं मेरे आका!"

आका ने कहा! "मैंने इन बच्चो को रोते हुए देखा था, मुझे अच्छा नहीं लगा कि मैं उन्हें हंस्ते हुए देखने से पहले चला जाऊं, जब वह हंसने लगे तो मेरी तबियत खुश हो गई।"

इतना कहकर वह खादिम को लिए वापसी के रास्ते पर चल पड़े।

आप इस वाकए से यकीनन यह अंदाज़ा लगा चुके होंगे कि ये आका और खादिम कौन थे?

जी हां! खलीफ-ए-दोम सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० और उनके खादिम असलम थे, जो रात को लोगों के हालात जानने के लिए गश्त पर निकले थे।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० वाकए फील के तेरह साल बाद ५८३ ई० को मक्का में पैदा हुए। वालिदेन ने उमर नाम रखा था। कुन्नियत अबू हफ्स थी। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० का सिलसिलए नसब आखिरी पुश्त पर रसूलल्लाह स.अ.व. से जा मिलता है। कबीले कुरैश की मक्के पर सरदारी थी। ये कबीला सय्यदना इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से था। आगे चलकर कुरैश के दस कबीले बन गए। नबी-ए-करीम स.अ.व. का तअल्लुक कबिलह बनू हाशिम से था। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० बनू अदि से थे।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की शखसियत, जाहिलियत के दौर में भी बड़ी मुमताज़ थी। कुरैश के मुअज़्ज़ज़ तरीन लोगों में आपका शुमार होता था। कुरैश के दस कबाएल में से हर एक के ज़िम्मे अलग-अलग काम थे। मसलन कोई खाना काबा की देख भाल करता था, कोई हाजियों को पानी पिलाता था और कोई झगड़ों के फैसले करता था। बनू अदी के ज़िम्मे दो काम थे। कुरैश की अन्दरूनी लड़ाईयों में या बाहर किसी कौम के साथ कोई मुआमला, सफारत की ज़िम्मेदारी, बनू अदी ही के सुपुर्द की जाती थी। और बनू अदी के सरदार सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के वालिद ख़त्ताब थे।

खित्ते अरब, जाहिलियत के जिस दौर से गुज़र रहा था, उसमें लड़ाई झगड़े और जंगे मामूल की बात थी। ऐसे माहौल में जिस खानदान में कोई बहादुर पैदा होता था वह उसके लिए फख्र का बाइस समझा जाता था। अगर किसी कौम का कोई जवान कुरैश को ललकारता था तो उसका जवाब देने के लिए कुरैश की नज़र जिस पर टिकती थी वह सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० थे। आपके वालिद ने आपकी तरबियत ही ऐसे कड़े उसूलों पर की थी कि सख्ती और शिद्दत आपकी तबियत का हिस्सा बन गई थी।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० अभी कमसिनी ही की उम्र में थे कि एक दिन उनके वालिद ने उन्हें बुलाया। आज भी उनकी आंखों में वही सख्ती झलक रही थी जो उनके मिज़ाज का एक हिस्सा बन चुकी थी। उन्होंने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० से अपने मखसूस रोबदार लेहजे में कहाः

"देखो! तुम अब शोउर के मंज़िल पर कदर रख रहे हो। आज से मैं अपने ऊंट चराने का काम तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूं। खबरदार! मैं कोई कोताही बर्दाश्त नहीं करूंगा।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० अदब और एहतिराम के साथ सर झुकाए सुनते रहे। उन्हें अब बहर हाल यह काम करना था। इन्कार की तो कोई गुंजाइश नहीं थी। वह जाने के लिए मुड़े तो उनके वालिद ने फिर उन्हें रोक लियाः

"सुनो! मैं किसी से यह न सुनूं कि खत्ताब का बेटा किसी काम का नहीं।"

यूं सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने ऊंट चराने का काम शुरू कर दिया। वह मक्के से तकरीबन १० मील के फासले पर ज़जनान के मकाम पर ऊंट चराने के लिए जाया करते थे। ऊंट चराना कोई बेइज़्ज़ती का काम नहीं था उन दिनों यह चीज़ अरबों के मिज़ाज और रिवाज में शामिल थी। अलबत्ता इतनी छोटी उम्र में ऊंट चराना वाकई एक अजीब बात थी। एक दिन सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० जब ऊंट चराते चराते थकन से चूर हो गए तो सुस्ताने के लिए एक पत्थर पर बैठ गए। अभी उन्हें बैठे ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि उनके वालिद खत्ताब उधर से गुज़रे। उन्हें पत्थर पर बैठा देख कर उनके वालिद गरजः

"उमर! और फिर उनकी पिटाई शुरू कर दी।

इस कड़ी तरबियत और निगरानी ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की तबियत को मज़ीद सख्त और जिस्म को खूब जफाकश बना दिया और एक वक्त आया कि पूरा अरब आपकी बहादुरी के किस्से सुनता था। उन्होंने तेगज़नी, सिपहगिरी और घुड़सवारी में कमाल हासिल किया। घुड़सवारी में तो यह हाल था कि उछल कर घोड़े की पुश्त पर सवार हो जाते थे। फन्ने कुश्ती में भी उन्होंने महारत हासिल की थी। चोटी के पहलवानों को उन्होंने शिकस्त से दो चार किया।

उस दौर में अरबों में पढ़ने लिखने का रिवाज नहीं था। गिनती के चन्द अफराद ही लिखना पढ़ना जानते थे। उन चन्द अफराद में आप भी शामिल थे। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० फसाहत व बलागत

में अपनी मिसाल आप थे। उन्हें तकरीर करने का ढंग खूब आता था। उनकी ज़बान से निकली हुई गुफ्तगू को कौम में एक खास पज़ीराई हासिल होती थी और उनकी बात की अहमियत को तसलीम किया जाता था। वह शायर नहीं थे लेकिन अशआर उन्हें पसन्द थे।

जब मक्के की सरज़मीन पर इस्लाम का नूर फैलना शुरू हुआ तो सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की उम्र २७ साल थी। नबी-ए-करीम स.अ.व. की दावत पर लब्बैक कहने वालों में उनके भाई ज़ैद बिन खत्ताब, बहन फातिमा बिन्त खत्ताब और बहनोई सईद बिन ज़ैद रज़ि० भी शामिल थे। लेकिन सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० अपने बाप दादा के मज़हब पर सख्ती से कायम रहे। उन्होंने दावते हक पर लब्बैक कहने वालों पर बहुत सख्ती की। उन्हें मारा पीटा, तशद्दुद किया, लेकिन मार पीट के छः सालों में वह किसी एक आदमी को भी अपने आबाई मज़हब की तरफ नहीं मोड़ सके।

उनका दिल सख्त कशमकश का शिकार था। मुसलामन हो जाने वालों पर हर सितम झेल कर भी डटे हुए थे। ये बात उन्हें हैरान किए हुए थी।

एक रोज़ उन्होंने रसूलुल्लाह स.अ.व. को खाना काबा के अन्दर नमाज़ पढ़ते देखा तो आप स.अ.व. के पीछे खड़े हो गए। उस वक्त आप स.अ.व. "सूरः अलहाक्का" बुलन्द आवाज़ में तिलावत कर रहे थे। सूरत के अल्फाज़ सीधे उनके दिल में उतरते चले गऐ। उनका दिल बेसाख्तह पुकार उठा कि वह लोग झूठ कहते हैं जिनकी नज़र में

आप स.अ.व. जादूगर और शायर हैं। आप स.अ.व. न तो जादूगर हैं और न ही शायर। यह कलाम किसी आदमी का हो ही नहीं सकता। यकीनन यह इल्हामी कलाम है। उनके दिल में इस्लाम के लिए नर्म गोशा पैदा हो गया। लेकिन मक्के में उन्हें जो मुम्ताज़ हैसियत हासिल थी, वह उनके आड़े आ रही थी। बाप दादा का मज़हब छोड़ना इतना आसान नहीं था।

जब ज़ेहन पर दबाव हो, दिल कशमकश में दो चार हो.... तो आदमी परेशान हो कर रह जाता है। इसी परेशानी के आलम में एक दिन उन्होंने सोचा कि जिस हस्ती की वजह से वह उलझनों में घिरे हुए हैं, क्यों न (मआज़ल्लाह) उस हस्ती ही का खात्मा कर दें। शायद इसी तरह कुछ सुकून पा लें यह सोच कर उन्होंने तलवार हाथ में थामी और नबी-ए-करीम स.अ.व. की तलाश में निकले। अभी रास्ते ही में थे कि एक मुसलमान नुऐम बिन अब्दुल्लाह रज़ि० मिल गए उनके कदमों की तेज़ी और हाथ में तलवार देखकर वह चौंके। ''यह उमर इतने गुस्से में कहां जा रहे हैं।'' उन्हें रोक कर उन्होंने पूछा।

''खैर तो है? कहां का इरादा है?''

बोले! ''मुहम्मद स.अ.व. को (मआज़ल्लाह) कत्ल करने जा रहा हूं।''

नुऐम बिन अब्दुल्लाह रज़ि० एक लम्हे के लिए तो यह सुन कर परेशान हो गए। वह सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० की ताकत, रोब और दबदबे से अच्छी तरह आगाह थे। उन्होंने सोचा किसी तरह इस तूफान का रूख मोड़ना चाहिए। यह सोच कर नुऐम बिन अब्दुल्लाह

रज़ि० ने कहाः ''पहले अपने घर की खबर तो लें, आप की बहन और बहनोई मुसलमान हो चुके हैं।''

यह सून कर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० तैश में आ गये उलटे कदमों अपने बहनोंई के घर पहुंचे। उस वक्त रसूलुल्लाह स.अ.व. के एक सहाबी खब्बाब बिन अरत रज़ि० उनके बहनोई सईद बिन ज़ैद रज़ि० और बहन फातिमा बिन्त खत्ताब रज़ि० को कुरआन सीखा रहे थे। सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने दरवाज़े पर दसतक दी तो सईद बिन ज़ैद और फातिमा बिन्त खत्ताब रज़ि० ने एक दूसरे की तरफ देखा, इस वक्त कौन हो सकता है? सईद बिन ज़ैद रज़ि० तो शायद अन्दाज़ा न कर सके लेकिन फातिमा बिन्ते खत्ताब रज़ि० को शक सा हो गया। दसतक देने का यह अन्दाज़ उमर का लगता है। उनसे बढ़ कर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० से कौन वाकिफ हो सकता है आने वाले लम्हात उनके लिए किसी बहुत बड़े खतरे का बाइस बन सकते थे। चुनांचे खब्बाब रज़ि० को उन दोनों ने छुपा दिया कुरआन के औराक जिनका वह मुताला कर रहे थे, छूपा दिए गए, लेकिन दस्तक देने के दौरान सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० तिलावत की आवाज़ सुन चुके थे। उनके चेहरे पर गुस्सा और हाथ में तलवार थी। उनकी अपनी बहन और बहनोई अपने आबाई दीन से फिर गए थे, उनके लिए इससे बढ़कर सदमें की और कोई बात नहीं हो सकती थी। दरवाज़ा खुला, अन्दर पहुंचे और तैश के आलम में पूछाः

''तुम लोग क्या पढ़ रहे थे?''

यह सुनकर उनकी बहन और बहनोई खामोश रहे। उन्होंने फिर कहाः

"मुझे मालूम हुआ है कि तुम मुसलमान हो गए हो और अपने बाप दादा के मज़हब से फिर गए हो।" इतना कहकर उन्होंने अपने बहनोई को मारना शुरू कर दिया, बहन बचाने के लिए आग बढ़ी तो बहन के सर पर लकड़ी दे मारी इनके सर से खून बह निकला। उस वक्त उन दोनों ने कहाः

"उमर तुमने ठीक सुना, हम मुसलमान हो चुके हैं। अल्लाह के रसूल स.अ.व. पर ईमान ले आए हैं। तुमसे जो हो सके कर लो। इस्लाम तो अब हमारे दिलों से नहीं निकल सकता।"

सय्यदना उमर फारूक रज़ि० ने बहन के लहूलुहान सर को देखा और उनके यह अल्फाज़ सुने तो सारा गुस्सा खत्म हो कर रह गया नर्मी से बोले!

"लाओ मुझे दिखाओ जो तुम पढ़ रहे थे।"

"नहीं, तुम नापाक हो, इसलिए तुम इसे हाथ नहीं लगा सकते। इसे पढ़ना चाहते हो तो पहले गुस्ल करो।"

सय्यदना उमर फारूक रज़ि० के गुस्ल करने पर बहन ने अवराक उन्हें दे दिए। उन पर सूरः ताहा की चन्द आयात लिखी हुई थीं। उन्होंने जब उन आयात को पढ़ा तो बेइख्तियार उनके मुंह से निकला।

"वाह! कितना उम्दा और आला दर्जे का कलाम है।"

सय्यदना उमर फारूक रज़ि० की जुबान से यह अल्फाज़ सुन कर खब्बाब बिन अरत रज़ि० भी बाहर निकल आये और बोलेः

"उमर! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी की दुआ को पुरा करने के लिए आपको चुन लिया है। मैंने कल ही आप स.अ.व. को यह दुआ करते सुना थाः इलाही! अबूजहल बिन हिशाम या उमर बिन खत्ताब के ज़रिए इस्लाम को कुव्वत अता कर लिहाज़ा उमर! अल्लाह की तरफ आओ! अल्लाह की तरफ आओ!

यह सुन कर सय्यदना उमर रज़ि० ने कहाः "मुझे मुहम्मद स.अ.व. के पास ले चलो।"

नबी-ए-करीम स.अ.व. उस वक्त दारे अरकम में थे। सय्यदना उमर फारूक रज़ि० ने तलवार कमर के साथ लटकाई और खब्बाब बिन अरत रज़ि० के साथ वहां जा पहुंचे। दरवाज़े पर दस्तक दी। अन्दर सहाबा किराम के झुरमुट में नबी-ए-करीम स.अ.व. मौजूद थे। एक सहाबी ने झांक कर बाहर देखा, सय्यदना उमर फारूक रज़ि० को देख कर घबरा गए। आपकी सख्त मिज़ाजी का उन्हें पूरी तरह इल्म था। उन्होंने आप स.अ.व. को आगाह कियाः "उमर कमर से तलवार लटकाए हुए हैं, न जाने उनका इरादा क्या है।"

आप स.अ.व. के चचा सैय्यदना हमज़ा रज़ि० भी वहां मौजूद थे। अल्लाह तआला ने उन्हें दिलेरी के वस्फ से खूब नवाज़ा था। फौरन बोलेः

"उन्हें अन्दर आने दो नेक इरादे से आए हैं तो ठीक है वरना उन्हीं की तलवार से उनका सर उड़ा दूंगा।"

आप स.अ.व. ने भी हुक्म दिया "उन्हें आने दो।"

दरवाज़ा खुला और सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० अन्दर दाखिल हुए दीगर सहाबा-ए-किराम और सय्यदना हमज़ा रज़ि० चौकन्ना थे। वह उनके किसी भी हमले का फौरी जवाब देने के लिए तैयार थे। उनके दिल आने वाले लम्हात की संगीनी के एहसास से बुरी तरह धड़क रहे थे। क्योंकि सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० को अरब के मुआशरे में बहुत इज़्ज़त और एहतराम के साथ देखा जाता था। उनकी तबीयत की सख्ती के बारे में सभी जानते थे। उनकी शहज़ोरी भी किसी से ढकी छुपी नहीं थी। उनके अन्दर दाखिल होते ही आप स.अ.व. अपनी जगह से उठे और उनकी तरफ बढ़े। उनकी चादर को पकड़ कर ज़ोर से खींचा और फरमायाः

"खत्ताब के बेटे! तुम किस इरादे से आए हो?

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० का दिल तो पहले ही नर्म पड़ चुका था। अर्ज़ किया! "अल्लाह के रसूल स.अ.व.! मैं अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने के लिए हाज़िर हुआ हूं।"

यह सुन कर दारे अरकम में मौजूद तमाम सहाबा किराम इस ज़ोर से नार-ए-तकबीर बुलन्द किया कि पूरी वादी इस नारे से गूंज उठीं। सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने कलमा पढ़ा और इस्लाम के दायरे में दाखिल हो गए। इस मौके पर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने अपने दिल की खलिश मिटाने के लिए सवाल कियाः

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! क्या हम हक पर नहीं हैं।"

आप स.अ.व. ने फरमाया! "उस ज़ात की कसम जिसके हाथ

में मरी जान है तुम लोग हक पर हो।"

ये सुन कर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने अर्ज़ किया।

"जब हम हक पर हैं और काफिर गलत रास्ते पर तो फिर अपना दीन क्यों छूपाएं।"

आप स.अ.व. ने फरमायाः "उमर! हमारी तादाद भी कम है और तुम देख रहे हो कि हम किन हालात से गुज़र रहे हैं।"

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० फरमाने लगेः "उस ज़ात की कसम! जिसने आपको नबी बनाकर भेजा है। मैं इस्लाम लाने से पहले जिन लोगों में उठता बैठता था, अब मुसलमान होकर उनके सामने जाऊंगा।"

इस पर तमाम मुसलमान दारे अरकम से दो सफें बना कर निकले। उनका रूख काबे की सिम्त था। एक सफ की क्यादत सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० कर रहे थे और दूसरी की सैय्यदना हमज़ा रज़ि० सबने मस्जिदे हराम में नमाज़ अदा की। कुफ्फारे कुरैश ने देखा तो तैश में आ गए। लेकिन इन दोनों बहादुरों के होते हुए वह कुछ नहीं कर सकते थे। चुनांचे खून के घूंट पी कर रह गये। बाद में जब सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० उन्हें तन्हा नज़र आए तो उन पर हमला आवर हो गए। उन्होंने डट कर उनका मुकाबला किया। बिल आखिर उन्हें छोड़ कर चले गए। ये वाकिया नबूवत के छठें साल पेश आया ईमान लाने के बाद सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० छठें साल तक मक्के ही में क्याम पज़ीर रहे। फिर जब दूसरे मुसलमनों के साथ मदीने की तरफ हिजरत की तो कुफ्फार से

ऐलानिया कहा:

"मैं आज मक्के से जा रहा हूं, किसी में हिम्मत है तो मुझे रोक कर दिखाए?"

लेकिन कौन था जो इन्हें रोकने की जुरअत करता। लोगों की नज़रों के सामने, उनके गुरूर के बुत पाश-पाश करके सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० मक्के से मदीने की तरफ चल दिए। हिजरत का यह सफर बस्ती कुबा पर खत्म हुआ। कुबा मदीने से तकरीबन ५ किलो मीटर पर वाके है। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० को वहां आप स.अ.व. का इन्तेज़ार था। वह आपकी हमराही में मदीने में दाखिल होना चाहते थे। बिला आखिर इन्तेज़ार की घड़ियां खत्म हुईं, अरब के चांद नबी-ए-करीम स.अ.व. सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० के हमराह तशरीफ ले आए और कुबा में कुछ अर्से क्याम किया। इस मकाम पर मस्जिदे कुबा की तामीर हुई। जब सब मुसलमान कुबा में पहुंच गए तो मदीने का रूख किया गया।

मदीने में नबी-ए-करीम स.अ.व. ने मुहाजरीन और अंसार में भाई चारे का रिश्ता कायम करवाया तो सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० को उतबान बिन मालिक रज़ि० का भाई बनाया। उन्होंने अपना निस्फ मकान उनके हवाले कर दिया।

एक सहाबी सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० ने ख्वाब में अज़ान के अल्फाज़ सुने।

उन्होंने यह अल्फाज़ नबी स.अ.व. को सुनाए तो आपने स.अ.व. ने सय्यदना बेलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि अज़ान कहें। सैय्यदना बेलाल रज़ि० ने ज्यों ही अज़ान शुरू की, सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० आप स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए और बोले:

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! उस ज़ात की कसम! जिसने आप को नबी बनाकर भेजा है मैंने भी बिल्कुल यही अल्फाज़ ख्वाब में सुने हैं।"

यह सुन कर नबी-ए-करीम स.अ.व. ने खुशी और मुसर्रत का इज़हार किया। चुनांच अज़ान के वह अल्फाज़ हमेशा के लिए मुकर्रर फरमा दिए गए।

हिजरत के दूसरे साल जंगे बद्र हुई। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० भी इस जंग में शरीक हुए और उन्होंने एक नामवर बहादुर आस बिन हेशाम को कत्ल कया। यह उनके सगे मामू लगते थे। इस जंग में मुसलमानों को फतह हासिल हुयी। सत्तर कैदी उनके हाथ लगे। नबी-ए-करीम स.अ.व. ने सहाबा-ए-किराम से मशवरा फरमाया कि इन कैदियों से कैसा मुआमला करना चाहिए। सय्यदना अबू बकर सिद्दीहक रज़ि० ने फिदया लेकर छोड़ने की राय दी। यह कैदी वह थे जो इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने के लिए आए थे। शिर्क के अंधेरों में डूबे हुए ये लोग हर सूरत कें मुसलमानों को खत्म कर देना चाहते थे। अपनी तलवारों के ज़ोर इनके सीनों से ईमान का नूर निकाल देना चाहते थे। इसी बिना पर सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने मशवरा दिया:

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! यह कुफ्र के सरदार और उमरा

हैं। आप हमें हुक्म दें हम अपने हाथों से अपनों की गर्दनें उड़ाएं।"

मालिके कायनात ने अर्शे बरीं पर सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की राय को पसन्द फरमाया, लेकिन नबी-ए-करीम स.अ.व. ने अपनी नर्म मिज़ाजी के बिना पर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० के मशवरे को पसन्द फरमाया, जिस पर अल्लाह तआला ने बाद में तन्बीह फरमाई।

इसी तरह मुनाफिकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी जब फौत हुआ तो रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने का इरादा फरमाया। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया:

"अल्लाह के रसूल सअ.अ.व.! उसने फलां-फलां मौके पर हमारे साथ यह किया था। आप फिर भी उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए तैयार हैं।"

आप स.अ.व. ने इसके बावजूद भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दी। जिस पर अल्लाह तआला कुरआने मजीद में यह हुक्म उतार दिया:

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ (التوبه:٨٤)

"उनमें से कोई मर जाए तो आप उसके जनाज़े की हरगिज़ नमाज़ न पढ़ें और नही उसकी कब्र पर खड़े हों।"

इसके अलावा भी कई मवांके पर अल्लाह तआला ने उनकी मुवाफिकत में आयात उतारीं। मसलन सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने ख्वाहिश ज़ाहिर की कि मकामे इब्राहीम को नमाज़ के लिए मुसल्ला बना लें। अल्लाह तआला ने कुरआन की यह आयत नाज़िल फरमा दी:

وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى (البقره:١٢٥)

"और तुम मकामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० फितरी तौर पर बहुत दिलेर थे। मुशरिकों से डरना, उनके सामने झुकना उन्हें किसी भी सूरत में गवारा नहीं था, इसीलिए सुलह हुदैबिया के मौके पर उन्होंने रसूल अल्लाह स.अ.व. से अर्ज़ किया:

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! क्या आप अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं?

आप स.अ.व. ने इर्शाद किया: "यकीनन मैं अल्लाह का सच्चा नबी हूं।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने फिर अर्ज़ किया: "क्या हम हक पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है?"

आप स.अ.व. ने फरमाया: "हां! हम हक पर और हमारा दुश्मन बातिल पर है।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने फरमाया: "अल्लाह के रसूल स.अ.व. जब हम हक पर और हमारा दुश्मन बातिल पर है तो फिर दब कर सुलह क्यों करें।"

आप स.अ.व. ने फरमाया: "मैं अल्लाह का रसूल हूं, अल्लाह के हुक्म के खिलाफ नहीं करता, वही मेरा मददगार है।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० फिर सय्यदना अबू बकर रज़ि० के

पास गए और उनसे भी यही बात कही। उन्होंने भी वैसा ही जवाब दियाः

नबी-ए-करीम स.अ.व. अल्लाह के रसूल हैं। आप अपने रब की नाफरमानी नहीं कर सकते वही आपका हामी है। हर मुआमले में आप स.अ.व. की फरमांबरदारी करो।"

तब कहीं सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० को दिल को इतमिनान हुआ। वापसी में सूरः फतह नाज़िल हुई जो मोमिनों के दिलों को सुकून बख्श्ने के लिए काफी थी। सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने सुलह होदैबिया के मौका पर अपने जिन जज़्बात का इज़हार किया था मआज़ल्लाह उनका मतलब किसी शक या वस्वसे का इज़हार नहीं बल्कि वह चूंकि फितरी तौर पर बहादुर और जुरअत मंद आदमी थे इसलिए चाहते थे कि काफिरों से दब कर बात न की जाए, बाद में उन्हें पूरी ज़िन्दगी इस बात पर अफसोस रहा। अपनी इस गलती के कफ्फारे के लिए उन्होंने बहुत से रोज़े रखे कई गुलाम आज़ाद किए और नफ्ल नमाज़े अदा की।

८ हिजरी में जब रसूलुल्लाह स.अ.व. १० हज़ार सहाबा के साथ मक्के की तरफ रवाना हुए तो सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० भी उनके हमराह थे। कुरैश के सरदार अबू सुफियान जो अभी तक इस्लाम नहीं लाए थे, रसूलुल्लाह स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए तो सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने अर्ज़ कियाः

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! मुझे इजाज़त दें, मैं अबू सुफियान का सर उड़ा दूं।"

लेकिन आप स.अ.व. ने ऐसा करने की इजाज़त न दी। अबू सुफियान रज़ि० ने वहीं इस्लाम कबूल कर लिया।

फतहे मक्का के बाद गज़वा-ए-हुनैन पेश आया। सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० उन चन्द अफराद में शामिल थे जो इब्तेदा में मुसमानों के पांव उखड़ने के बाद रसूलुल्लाह स.अ.व. के साथ मैदाने जंग में डट कर खड़े रहे। बाद में मुसलमानों ने पलट कर कुफ्फार पर पय दर पय हमले किए और उनको शिकस्त से दोचार किया।

जंगे तबूक में सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने अपने माल का निस्फ हिस्सा रसूलुल्लाह स.अ.व. की खिदमत में पेश किया ताकि जंग की तैयारी हो सके। यही जंग थी जिसके बाद रसूलुल्लाह स.अ.व. इस दुनिया से रूखसत हुए।

नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात का सानेहा सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० के लिए एक अनहोनी थी। उन्हें यकीन ही नहीं आ रहा था। वह गुस्से के साथ यह ऐलान कर रहे थे!

"जो शख्स यह कहेगा कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने वफात पाई है मैं उसकी गर्दन उड़ा दूंगा।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने उन्हें समझाया तो उन्हें नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात का यकीन आया।

जब खिलाफत के मसले पर मुसलमानों में इख्तिलाफ पैदा हुआ तो इस मौके पर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ही थे जिन्होंने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० का नामे गिरामी खिलाफत के लिए

पेश किया और कहाः

"अबू बकर सिद्दीक रज़ि० रसूलुल्लाह स.अ.व. के सहाबी हैं, गार के साथी हैं। यह तमाम मुसलमानों से ज्यादा तुम्हारे मुआमलात के वाली होने के हकदार हैं।"

सभी मुसलमानों ने उनकी राय से इत्तेफाक किया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० की खिलाफत करीबन सवा दो बरस रही। जमादीउल उला १३ हिजरी में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक सख्त बीमार हो गए। बचने की उम्मीद जब बहुत कम हो गई तो उन्होंने खिलाफत के बारे में चन्द अहम और करीबी सहाबा से मशवरा किया और फिर खुद ही सय्यदना उमर फारूक रज़ि० का नाम बतौरे खलीफा तजवीज़ कर दिया। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया कि वह मिज़ाज के बहुत सख्त हैं। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने इर्शाद कियाः

"जब उन पर खिलाफत का बोझ पड़ेगा तो नर्म हो जाएंगे।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने वफात से कब्ल उन्हें वसीयत की कि ईराक में मुसलमान ईरानियों से लड़ रहे हैं, उनके लिए फौरन मदद भेजी जाए।

२२ जमादीउस्सानी को सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ि० ने वफात पाई तमान मुसलमानों ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की बैअत कर ली। इस तरह सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० मुसलमानों के दूसरे खलीफ-ए-राशिद बन गए।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ज़ोहद व तक्वा में सबसे बढ़ कर थे। इसी का असर था कि अल्लाह तआला ने उनके दिल को हिकमत से भर दिया था कि और उनकी ज़ुबान से हिकमत व दानाई ही की बात निकलती थी। तलहा बिन ओबैदुल्लाह रज़ि० फरमाते हैंः

"सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० न तो इस्लाम लाने वालों में हम से आगे थे, न हिजरत में हमसे सबकत ली। लेकिन आप दुनिया से बे रगबत और आखिरत की रगबत रखने वाले थे।"

रबी बिन ज़्याद हारशी रज़ि० फरमाते हैंः "मै सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के पास गया उन्होंने सख्त खुराक की वजह से पेट में तक्लीफ को बताया। मैंने कहाः "अमीरूल मोमिनीन! तमाम लोगों से बढ़कर अच्छी खुराक, नर्म लिबास और सवारी के आप मुस्तहिक हैं।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० फरमाते हैंः

"हमारी मिसाल एक ऐसी कौम की सी है जिन्होंने मिलकर सफर शुरू किया और ज़ादे राह एक आदमी के पास जमा कर दिया और उससे कहा कि हम पर खर्च करते रहो। क्या उसे हक हासिल है कि वह उसमें से अपने आप को दूसरों पर तरजीह दे।"

रबी बिन ज़्याद रज़ि० कहते हैं मैंने जवाब दियाः "हरगिज़ नहीं।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० मुसलमानों के माल को अपने लिए इसी तरह समझते थे जैसे यतीम का माल होता है। फरमाया करते थेः

"मेरे नज़दीक मुसलामनों का माल यतीम के माल की तरह है। जो उससे जितना बच सके, बचे अगर लेना भी पड जाए तो हस्बे ज़रूरत ले, ज़रूरत से ज़ायद, असराफ की इजाज़त नहीं।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के नज़दीक एक वाली को मुसलमानों के माल से सिर्फ़ इतना लेने की इजाज़त है कि वह सर्दियों और गर्मियों का एक-एक जोड़ा ले सकता है और एक मोतवस्सित दरजे के मुसलमान के बराबर खाने पीने का सामान ले सकता है।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० रेयाया पर बहुत शफकत और मेहरबानी करते थे। उनका मामूल था कि नमाज़ से फारिग हो कर कुछ वक्त लोगों के मसायल सुनने के लिए बैठते थे। लोग उनके पास अपने शिकायात लेकर आते थे। वह मुहताजों की मदद करते थे, मज़लूमों की दाद रसी करते थे। एक दफा बाज़ार में एक नौजवान औरत ने उनका रास्ता रोक लिया और कहा:

"अमीरूल मोमिनीन, मेरा शौहर फौत हो गया, मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं, अल्लाह की कसम उनको खिलाने के लिए जानवर के खुर भी मयस्सर नहीं, न उनके लिए कोई ज़मीन है न कोई दूध वाला जानवर और मुझे डर है कि वह भूख से मर जाएंगे।"

उस औरत की फरयाद ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० को शदीद मुतअस्सिर किया। वह औरत फिर बोली:

"मैं खफ्फाफ बिन ऐमा गफारी रज़ि० की बेटी हूं मेरा बाप नबी-ए-करीम स.अ.व. के साथ सुलह हुदैबिया में शरीक था।" यह

सुन कर आपने फरमायाः "मरहबा! बड़ा करीबी नसब (रिश्ता) है।"

फिर सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० घर गए, एक ऊंट पर खाने की अशया से भरी दो बोरियां रखीं और खर्च के लिए कुछ दूसरा माल भी रखा और उस ऊंट की महार उस औरत के हाथ में देते हुए फरमायाः

"यह ले जाओ! इसके खत्म होने तक इंशाअल्लाह! अल्लाह तआला बेहतर इन्तेज़ाम फरमा देगा।"

एक आदमी ने कहाः "अमीरूल मोमिनीन आपने इसको बहुत ज्यादा दे दिया है।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने फरमायाः "मैंने इसके बाप और भाई को देखा उन्होंने लम्बा अर्सा एक किले का मुहासरा किया और बिल आखिर उसे फतह कर लिया।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० में इज्ज़ व इंकेसारी की खूबी बहुत नुमाया थी। इस खूबी की बिना पर लोग उनका बहुत ऐहतराम करते थे और दिली तौर पर उनसे मुहब्बत रखते थे। एक दफा आप मुल्के शाम तशरीफ लाए। जिस रास्ते पर आप जा रहे थे उस पर पानी था आप ऊंट से उतरे, मोज़े उतारे और ऊंट की महार पकड़ कर पानी में चलने लगे। सय्यदना अबू ओबैदा बिन जर्राह रज़ि० ने देख कर फरमायाः

"आपने अहले इलाका के सामने अच्छा नहीं किया। आपने मोज़े उतारे, सवारी के आगे-आगे चले और पानी के अन्दर दाखिल हो

गए।''

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने फरमायाः

''अबू ओबैदा! अगर तुम्हारे बजाए कोई और यह बात कहता तो और बात थी। तुम लोगों में मुट्ठी भर थे, कमज़ोर थे। अल्लाह ने इस्लाम की वजह से तुम्हें इज़्ज़त बख़्शी अगर इसको छोड़ कर तुम इज़्ज़त ढूंढोगे तो ज़लील हो जाओगे।

सलीम बिन हंज़ला बकरी रह० कहते हैं: हम सैय्यदना अबी बिन काब रज़ि० के गिर्द बैठे सवाल व जवाब में मशगूल थे कि अचानक वह उठ खड़े हुए और चलने लगे, हम भी उनके पीछे चलने लगे। वह इसी तरह सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के पास आए तो आपने यह देख कर सख्त नाराज़गी का इज़हार किया और सैय्यदना ओबई बिन काब रज़ि० से मुखातिब होकर फरमाने लगेः

''ये काम आगे वालों के लिए फितना और पीछे चलने वाले के लिए ज़िल्लत है।''

एक दिन सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने लोगों को जमा होने के लिए कहा। जब काफी लोग जमा हो गए तो मिम्बर पर चढ़ कर अल्लाह की हमदोसना बयान की, रसूलुल्लाह स.अ.व. पर दरूद पढ़ा और फरमायाः

''लोगो! मुझे वह वक्त याद है जब मैं मुट्ठी भर खजूरो या अंगूरों के बदले पूरा दिन अपने मामू की बकरियां चराया करता था।''

इतना कह कर मिम्बर से नीचे उतर गए। सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि० फरमाने लगेः

''अमीरूल मोमिनीन! आपने सिवाए अपने तौहीन करने की और तो कुछ नहीं किया।''

फरमायाः '' अफसोस अब्दुर्रहमान! बात दर असल यह है कि मैं अकेला बैठा था तो मेरे दिल में ख्याल आया कि तू अमीरूल मोमिनीन है, तुझसे बड़ा कौन है? मैं तो सिर्फ अपने नफ्स को इसकी असलियत बताना चाहता था।''

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते हैं:

मैंने एक ऊंट खरीदा और उसे चरागाह में भेज दिया। जब वह मोटा हो गया तो बाज़ार ले अया। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने बाज़ार में आए हुए इस मोटे ताज़े ऊंट को देख कर फरमायाः ''यह किसका है?

जवाब मिलाः अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का!

फौरन पुकार कर बोलेः अब्दुल्लाह बिन उमर, शाबाश! शाबाश! अमीरूल मोमिनीन के बेटे!

आवाज़ सुन कर मैं दौड़ता हुआ आया और पूछाः ''अमीरूल मोमिनीन क्या बात है?''

बोलेः ''यह ऊंट कैसा है?''

मैंने जवाब दियाः ''यह कमज़ोर सा ऊंट था। मैंने लेकर चरागाह

में भेज दिया।"

फरमायाः "अच्छा! चरागाह वाले कहते होंगे, अमीरूल मोमिनीन के बेटे का ऊंट है। इसे चारा खिलाओ, इसे पानी पिलाओ। अब्दुल्लाह, ऊंट की अस्ल कीमत जिस पर खरीदा है अपने पास रखो और बाकी रकम बैतुलमाल में जमा करवा दो।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० जब लोगों को किसी काम से रोकते तो आकर अपने घर वालों को भी जमा करके कहतेः

"लोग तुम्हारी तरफ इस तरह देखते हैं जैसे परिन्दा गोश्त की तरफ देखाता है। अगर तुमने (गलत काम) किया तो वह भी करेंगे और अगर तुम रूक गए तो वह भी रूक जाएंगे। अल्लाह की कसम! अगर तुममें से किसी ने ऐसे काम का इरतिकाब किया जिससे मैंने मना किया है तो मैं तुम्हें दोहरी सज़ा दूंगा।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के दौर में मुसलमानों ने अज़ीमुश्शान फतुहात हासिल कीं। हुकूमत २२ लाख मुरब्बा मील तक के इलाके पर फैल गई थी। इसमें अरब के अलावा इराक, ईरान, मिस्र, फिलिस्तीन, बहरैन, आरमिनिया, आज़र बाईजान, सिस्बान वैगरह शामिल थे। इतने बड़े मुल्क का इन्तिज़ाम बहुत कठिन था लेकिन सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने बहुत खूबी से इन्तिज़ाम किया। उन्होंने इस्लामी सल्तनत को सूबों में बांट दिया। फिर हर सूबे को ज़िलों में तकसीम किया। आम तौर पर एक सूबे में दस से लेकर बीस ज़िले होते थे। मुल्क का इन्तिज़ाम चलाने में सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० सहाबा-ए-किराम रज़ि० से मशवरा लेते रहते थे।

मशवरा करने के लिए उन्होंने जलीलुल्कद्र सहाबा-ए-किराम रज़ि० पर मुश्तमिल एक मजलिसे शुरा तशकील दी थी। इसके इजलास ज़्यादा तर मस्जिदे नबवी में होते थे।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने हर सूबे का एक गवर्नर मुकर्रर किया हुआ था। उनकी निगरानी वह खुद किया करते थे। इन गवर्नरों को सादा अंदाज़ में ज़िन्दगी गुज़ारने की हिदायत की जाती थी। आप हर साल हज के ज़माने में अपने गवर्नरों को जमा करते, उनसे लोगों के अहवाल दरयाफ्त करते। पीछे के हालात पूछते। फिर लोगों से उन गवर्नरों के बारे में पूछते। लोग बेधड़क शिकायत करते। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० लोगों के सामने इस किस्म का खुतबा देतेः

"लोगो! तुम पर जो हाकिम मुकर्रर किये गए हैं वह इसलिए नहीं भेजे गये कि तुम्हें मारें पीटें और तुम्हारा माल छीन लें, बल्कि उन्हें इसलिए भेजता हूं कि वह तुम्हें रसूलुल्लाह स.अ.व. के तरीके सिखाएं। अगर किसी ने इसके खिलाफ किया हो तो मुझ से बयान करो ताकि मैं उसका बदला लूं।"

लोगों को आम इजाज़त थी कि वह किसी वक्त भी अपनी शिकायत पेश कर सकते थे। एक दफा मिस्र के एक गरीब शख्स ने गवर्नर के बेटे की शिकायत की कि उसने उसे बेला वजह पीटा है। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने बाप-बेटे को बुलवा लिया फिर उस गरीब को कोड़ा देकर कहाः

"जितने कोड़े इसने तुम्हें मारे थे उतने ही तुम उसे मारो।"

उस गरीब ने कोड़े मारे, तादाद पूरी होने पर सय्यदना उमर

फारूक़ रज़ि० ने फरमायाः

"अब दो चार कोड़े गवर्नर को भी मारो!"

लेकिन उस आदमी ने ऐसा करना पसन्द न किया।

सय्यदना खालिद बिन वलीद रज़ि० इस्लाम के बहुत बड़े जरनील थे। उन्होंने बीसीयों लड़ाईयां लड़ी बड़ी-बड़ी सल्तनतों को उन्होंने मलिया मेट करके रख दिया। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के दौर में जब वह मुसलसल फतुहात हासिल करते जा रहे थे तो ऐन उस हालत में सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने उन्हें सिपहसालारी से माजूल कर दिया लोगों ने वजह पूछी तो उन्होंने फरमायाः

"मुसलमान यह ख्याल करने लगे थे कि यह फतुहात खालिद बिन वलीद रज़ि० की वजह से हो रही हैं, जब कि फतुहात हमें अल्लाह तआला कि मेहरबानी से हो रही हैं।"

जज़ीरा के गवर्नर अयाज़ बिन गनम रज़ि० के बारे में इत्तिला मिली कि वह बारीक लिबास पहनते हैं। दरवाज़े पर दरबान भी मुकर्रर कर रखा है। आपने उन्हें फौरन बुलवाया। उनके लिबास उतरवा कर बालों का बना हुआ खुरदरा कुर्ता पहना दिया और बकरियों का रेवड़ मंगवाकर उन्हें हुक्म दिया कि जंगल में जाओ और बकरियों चराओ। अयाज़ बिन गनम रज़ि० सहाबी थे। एक सूबे के गवर्नर थे। इतनी सख्त सज़ा सुनने के बाद उन्होंने वादा किया कि वह आइंदा ऐसा लिबास नहीं पहनेंगे। चुनांचे सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने उन्हें माफ करके अपने ओहदे पर वापस भेज दिया। अयाज़ बिन गनम रज़ि० जब तक ज़िन्दा रहे, मोटा लिबास पहनते रहे, न कभी बारीक लिबास पहना, न दरवाज़े पर दरबान मुकर्रर किया।

फतुहात का दायरा फैलने से बेपनाह माले गनीमत हासिल हो रहा था। चुनांचे सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने १५ हिजरी में बैतुलमाल कायम कर दिया। उसमें से यतीमों, गरीबों, नादारों और बेवाओं के वज़ीफें दिए जाते थे। ज़रूरत मन्दों कों कर्ज़ भी दिया जाता था। जंगी ज़रूरीयात पर भी खर्च किया जाता था। एक दिन सैय्यदना उसमान रज़ि. ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० को तेज़ धूप में भागते देखा तो हैरान हुए, पूछने पर पता चला कि बैतुल माल का ऊंट गुम हो गया था उसको तलाश कर रहे हैं।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने अपनी बीवी को बैतुल माल की खुशबू फरोख्त करने के लिए दी। वज़न पूरा करने के लिए कभी-कभी वह अपने दांतों से खूशबू तोड़ती थीं। इस अमल के दौरान कुछ खुशबू उनकी उंगलियों के साथ लग गई। उन्होंने वह खुशबू अपने दूपट्टे के साथ मल ली। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० तशरीफ लाए तो पूछाः

"यह खुश्बू कैसी है?"

जवाब में उन्होंने सारा किस्सा बयान कर दिया। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने उनका दुपट्टा उतार कर ज़मीन पर मलना शुरू कर दिया और फरमायाः

"तुम मुसलमानों की खुशबू से खुशबू हासिल करती हो।"

मिट्टी में मलने के बाद उसको पानी से धोया और उस वक्त तक धोते रहे जब तक उसकी खुशबू खत्म न हो गयी।

एक मरतबा रूम के बादशाह का एलची सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के पास आया आपकी बीवी ने एक दिनार कर्ज़ लेकर उसका अतर खरीदा और उसे शिशियों में भर कर एलची के हाथ शाहे रूम की बीवी० को तोहफे में भेज दिया। जब तोहफा शाहे रूम की बीवी को मिला तो उसने अतर निकाल कर खाली शिशियों को हिरे जवाहिरात से भरा और सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० की बीवी को भेज दिया। आपकी बीवी ने जवाहिरात शिशियों से निकाल कर चटाई पर बिखेरे हुए थे कि सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० घर में दाखिल हुए और पूछाः

"यह क्या है?"

बीवी ने सारा माजरा सुनाया। आपने सारे जवाहिरात बेच कर एक दिनार बीवी को वापस किया और बाकी दिनार बैतुलमाल में जमा करवा दिए।

एक दफा बीमारी की हालत में इलाज के लिए शहद तजवीज़ किया गया। बैतुलमाल में शहद मौजूद था लेकिन आपने लेना गवारा न किया। आखिर कार लोगों को जमा किया गया, जब सबने इजाज़त दे दी तब शहद लिया।

अब्बदुर्रहमान बिन नजीह रह० कहते हैं कि मैं आपके पास हाज़िर था गुलाम दूध दूह कर लाया। आपने उसका ज़ायका बदला

हुआ महसूस किया। गुलाम से पूछाः

"यह दूध कहां से लाए हो?"

उसने जवाब दियाः "ऊंटनी का बच्चा दूध पी गया था। मैंने बैतुलमाल की ऊंटनी का दूध आपको दे दिया।"

आपने कहा! "अफसोस तु मुझे आग पिला रहा है। जाओ! अली बिन अबी तालिब रज़ि० को बुला कर लाओ।"

वह बुलाकर लाए तो आपने फरमायाः "उसने मुझे बैतुल माल की ऊंटनी का दूध पिलाया है। क्या तुम मुझे इसकी इजाज़त देते हो, क्या यह मेरे लिए हलाल है?"

सय्यदना अली रज़ि० ने फरमयाः "अमीरूल मोमिनीन आपके लिए हलाल है।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने अद्ल व इंसाफ का बेहतरीन नमूना दुनिया को दिखाया। आपने ऐसे काज़ी मुकर्रर किए जिनके दिल अल्लाह के खौफ से लबरेज़ थे। उन लोगों को यह हुक्म था कि तमाम फैसले कुरआन व हदीस के मुताबिक किए जाएं। काज़ियों की तंख्वाहें मुकर्रर की गईं। आपने कूफे में शुरैह को काज़ी मुकर्रर किया। उनके फैसलों ने बहुत शोहरत हासिल की। वक्त आने पर वह अमीरूल मोमिनीन के खिलाफ भी फैसले दे देते थे।

आपने पुलिस का मुहक्मा कायम किया। खुद रिआया का हाल जानने के लिए रातों को गश्त किया करते थे। मुल्के शाम के सफर से लौट रहे थे कि एक बुढ़िया नज़र आई, उसने पूछाः

"बड़ी बी! उमर के बारे में कुछ मालूम है?"

वह बोलीः "हां, सुना है शाम गया हुआ है। अल्लाह उसे समझे! आज तक उसने मुझे फूटी कोड़ी नहीं दी। उसे मालूम नहीं मैं कितनी तंगी से गुज़ारा कर रही हूं।"

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने यह सुन कर फरमायाः "बड़ी बी, तुमने जाकर उमर को अपना हाल बताया?"

बुढ़िया ने कहाः "अगर उसे रेआया का हाल मालूम नहीं है तो खिलाफत क्यों करता है?"

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० यह सुन कर रो पड़े। फिर उससे पूछाः "तुम क्या लेकर उमर को माफ कर सकती हो?"

उसने कहाः "अगर मुझे पच्चीस दीनार मिल जाएं तो माफ कर दूंगी।"

आपने उसी वक्त उसे पच्चीस दीनार दे दिए। वह खुश होकर दुआएं देने लगी। "अल्लाह उमर को माफ करे! उस पर अपनी रहमत नाज़िल करे।"

बाद में सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने उसका वज़ीफा मुकर्रर फरमा दिया।

एक मरतबा आपने एक नन्हें बच्चे को रोते देखा तो उसकी मां पर नाराज़ हुए कि वह बच्चे को दूध क्यों नहीं पिलाती। वह आपका पहचानती नहीं थी, कहने लगीः "अमीरूल मोमिनीन ने हुक्म दिया है कि जब तक बच्चे मां का दूध पीते रहें, बैतुल माल से उनका वज़ीफा

मुकर्रर न किया जाए। मैं उसका दूध छूड़ा रही हूं ताकि वज़ीफा लग जाए।" यही इसके रोने की वजह है।

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० यह सुन कर बहुत रोए। फिर एलान कर दिया कि जिस दिन कोई बच्चा पैदा होगा, उसका वज़ीफा उसी दिन मुकर्रर हो जाएगा।

एक शख्स पर नज़र पड़ी वह बाएं हाथ से खाना खा रहा था उसके करीब जाकर फरमायाः

"दाएं हाथ से क्यों नही खाते?"

उसने कहाः "मेरा दायां हाथ मूता की लड़ाई में कट गया था।"

यह सुन कर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० रोने लगे और बोलेः

"अफसोस! तुम्हें वज़ू कौन कराता होगा।" फिर उसकी खिदमत के लिए एक खादिम मुकर्रर किया और ज़रूरत की चीज़ें उसके घर भेजवाईं।

इसी तरह एक रात गश्त करते हुए एक मकान के बाहर रूक गए एक औरत अपनी बच्ची से कह रही थी।

"बेटी दूध में पानी मिला दो।"

बेटी बोलीः "मां, अमीरूल मोमिनीन का हुक्म है कोई दूध में पानी न मिलाए।"

मां ने उसे डांट कर कहाः "बातें न बनाओ! पानी मिलाओ, अमीरूल मोमिनीन कौनसा देख रहे हैं।"

बेटी ने कहाः "अमीरूल मोमिनीन नहीं देख रहे हैं मगर अल्लाह तो देख रहा है।"

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० यह गुफ्तगू सुन कर बहुत खुश हुए। अपने खादिम से कहा कि इस घर को अच्छी तरह पहचान लो। दूसरे दिन उन लोगों के बारे में मालूमात हासिल कीं। आपको उस लड़की की ईमानदारी इस कदर पसन्द आई कि अपने बेटे आसिम की उसके साथ शादी कर दी। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहम० उसी खातून के नवासे थे। उन्होंने अपने दौरे हुकूमत में अदल व इंसाफ की शानदार मिसालें कायम कीं। उनकी सादगी, परहेज़गारी और इंसाफ पसन्दी की बिना पर उन्हें उमरे सानी कहा जाता है।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने रास्तों में चौकियां बनवाई ताकि रास्ते महफूज़ रहें। शहरों में मेहमान खाने बनवाए, मुल्क में जगह-जगह नहरें खुदवाई जिनसे आबपाशी आसान हो गई। सड़कें और पुल बनवाए, नये शहर बसाए, करीबन चार हज़ार मस्जिदें तामीर करवायीं। खाना काबा और मस्जिदे नबवी को वसी करवाया। सन् हिजरी कायम किया। मरदुम शुमारी का निज़ाम रायज किया। सिक्का जारी किया। कुरआन और हदीस की तालीम आम कर दी। आपने तमाम इलाकों में फकीह मुकर्रर किए। लोग उनसे दीनी मसायल का हल पूछते थे। उनके ज़माने में इस्लाम बहुत तेज़ी से फैला। आपने गैर मुस्लिमों से अच्छा सुलूक करने की हिदायत की थी। इसीलिए इनमें से अक्सर मुसलमान हो जाते थे।

मुल्के शाम में मुसलमानों को मस्जिद बनाने के लिए एक ज़मीन

की ज़रूरत पेश आई ज़मीन एक यहूदी की मिल्कियत थी। मुसलमानों ने ज़मीन उससे खरीदना चाही लेकिन यहूदी ने इंकार कर दिया। मुसलमानों ने ज़बरदस्ती ज़मीन पर कब्ज़ा करके मस्जिद तामीर कर ली। यहूदी ने सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० से शिकायत की। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने हुक्म दिया कि मस्जिद नाजायज़ तरीके से बनाई गई है। इस्लाम उसकी इजाज़त नहीं देता। मस्जिद को गिरा कर ज़मीन यहूदी को दे दी जाए। चुनांचे ज़मीन यहूदी को वापस दे दी गई। उसने उस जगह अपना मकान बना लिया।

सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० ने जंगों का सिलसिला बढ़ने पर बाकायदा फौजी निज़ाम तशकील दिया। फैजियो की तंख्वाहें मुकर्रर की मुजाहिदीन के बीवी बच्चों और गुलामों के वज़ीफे मुकर्रर किए। फौज को दो हिस्सों में तकसीम किया, एक बाकायदा फौज जो हमेशा महाज़ों पर रहती थी। दोसरी रज़ाकार फौज यह लोग उमूमन घरों में रहते थे। ज़रूरत पड़ने पर उन्हें महाज़ पर भेजा जाता था। उनकी तंख्वाहें बाकाएदा फौज से कम थीं। मुल्क में जगह-जगह फौजी छावनियां कायम की। फौज के साथ खज़ानची, तबीब, जर्राह, माले गनीमत का हिसाब रखने वाले, दूसरी ज़ुबानें जाने वाले और दुश्मन की जासूसी करने वाले भी रहते थे। फौज की तालीम का इंतेज़ाम भी किया गया।

इसी मोनज़्ज़म फौज नें मुल्कों के मुल्क फतह कर डाले, मुजाहिदीन जिधर का रूख करते थे फतह उनके कदम चूमती थी। ईराक, मदायन, हलवान, जज़ीरा, नहाविन्द, आज़र बाईजान,

आरमिनिया और बेशुमार इलाके मुसलमानों के कब्ज़े में आए। उनमें बैतुल मुकद्दस भी शामिल था। फिलिस्तीन उन दिनों शाम का हिस्सा था। रसूलुल्लाह स.अ.व. के सफरे मेराज की पहली मंज़िल भी यही थी। मुसलमानों का पहला किबला भी यही था। न सिर्फ़ यहूदी और ईसाई बल्कि मुसलमान भी इसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

मुसलमानों ने जब बैतुल मुकद्दस का मुहासरा किया तो शहर के बाशिन्दों ने दरवाज़े बन्द कर लिए चन्द दिन मुहासरे में गुज़ार कर उन्होंने मुसलमानों के सिपहसालार अबू ओबैदा बिन जर्राह रज़ि० को पैगाम भेजा कि हम शहर मुसलमानों के हवाले करने के लिए तैयार हैं लेकिन शर्त यह है कि मुसलमानों के खलीफा खुद यहां आएं और सुलह का मुआहेदा करें।

अबू ओबैदा बिन जर्राह रज़ि० ने यह बात सैय्यदना उमर तक पहुंचाई। अमीरूल मोमिनीन ने सहाबा से मशवरा करके बैतुल मुकद्दस का रूख किया। दुनिया के बड़े-बड़े हुकमरान जिनका नाम सुन कर कांप उठते थे, उनके सफर का हाल यह था कि एक गुलाम के सिवा उनके साथ कोई नहीं था। फौज न खेमे, नक्कारे न झण्डे, बड़ी सादगी से सफर किया। बैतुल मुकद्दस के करीब जाकर सहाबा-ए-किराम ने मशवरा दिया कि लिबास तबदील कर लें। एक कीमती पोशाक पेश की गई लेकिन आपने वह लिबास पहनने से इंकार कर दिया और फरमायाः

"अल्लाह ने हमें जो इज़्ज़त दी है वह इस्लाम की वजह से है और हमारे लिए यही काफी है।"

गर्ज़ इसी हालत में शहर में दाखिल हुए, ईसाईयों ने शहर आपके हवाले कर दिया। मुसलमानों ने वहां एक मस्जिद तामीर की जिसका नाम मस्जिद-ए-उमर रखा गया। यह मस्जिद आज भी वहां मौजूद है।

सय्यदना उमर फारूक रज़ि० की खिलाफत के दौरान एक दफा अरब में शदीद कहत पड़ा। न तो इंसानों के खाने के लिए कुछ रहा और न जानवरों के लिए। सय्यदना उमर फारूक रज़ि० यह हाल देख कर बहुत ज़्यादा परेशान हुए। आपने रेआया की खबरगीरी के लिए दिन रात एक कर दिए। बैतुल माल का सारा गल्ला लोगों में तकसीक कर दिया गया। नक़्दी भी तकसीम की गयी। तमाम सूबों के हाकिमों को खत लिख कर ज़्यादा से ज़्यादा गल्ला भेजवाने का हुक्म दिया। अबू ओबैदा बिन जर्राह रज़ि० ने शाम के इलाके से चार हज़ार ऊंट गल्ले से लदे हुए भेजे। सैय्यदना अम्र बिन आस रज़ि० ने मिस्र से समुन्दर के रास्ते गल्ले से लदे हुए बहरी जहाज़ रवाना किए। हर जहाज़ पर छः हज़ार मन गल्ला लदा हुआ था। सय्यदना उमर फारूक रज़ि० ने गल्ले की तकसीम का इंतेज़ाम कुछ इस तरह से किया कि कहत का शिकार होने वालों के नाम रजिस्टरों में लिखे गए। हर नाम के साथ उनकी ज़रूरत के मुताबिक गल्ले की मिकदार लिखी गई फिर हर शख्स को गल्ले की पर्ची दी जाती जिस पर सय्यदना उमर फारूक रज़ि० की मुहर होती इस कहत के दौरान लोगों में गल्ला, गोश्त, खजूरें और कपड़े भी तकसीम किए गए।

कहत के दौरान सय्यदना उमर फारूक रज़ि० ने गोश्त, दूध और

घी का इस्तेमाल बिल्कुल तर्क कर दिया था। अक्सर भूखे रहते या आम लोगों के साथ मिल कर खाते, इस फाकाकशी का असर आप के जिस्म पर भी पड़ा। लोग उन्हें देख कर कहते कि अगर कहत दूर न हुआ तो रेआया का गम उन्हें मार डालेगा। कहत के दिनों में सख्त बेचैन रहे। आप अल्लाह तआला से गिड़गिड़ा कर दुआ करते थे।

"ऐ अल्लाह! मेरे आमाल की वजह से मुहम्मद स.अ.व. की उम्मत को तबाह न कर।"

आखिर एक दिन नबी-ए-करीम स.अ.व. के चचा अब्बास रज़ि० को और दूसरे मुसलमानों को साथ लेकर नमाज़े इस्तिस्का अदा की और अल्लाह तआला से बड़ी आजज़ी के साथ बारिश की दुआ की। अभी दुआ हो रही थी कि आसमान पर बादल छाए गए। ऐसी मुसलाधार बारिश हुई कि हर तरफ पानी ही पानी नज़र आने लगा। इस बारिश ने खुश्क खेतों में जान डाल दी और कहत दूर हो गया।

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० की दिली तमन्ना थी कि उन्हें शहादत की मौत नसीब हो और यह शहादत रसूलुल्लसह स.अ.व. के शहर ही में मिले। खिलाफत के गयारहवें साल उनकी यह दोनों दुआएं कुबूल हुयीं।

२३ हिजरी में हज के लिए मक्का गए। हज से वापस लौटे तो जुमा के दिन मस्जिद में खुतबा दिया, जो बहुत तवील था। इस खुतबे में जहां आपने बहुत सी नसीहतें की वहां अपने एक ख्वाब का ज़िक्र करते हुए फरमायाः "मैं समझता हूं कि मेरी मौत का वक्त करीब आ गया है।"

मदीना में मुगीरा बिन शोबा रज़ि० का एक ईरानी कारीगर गोलाम अबू लूलू फिरोज़ था एक दिन उसने सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० से अपनी आका की शिकायत की कि वह काम ज़्यादा लेता है और मुआवज़ा कम देता है। सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० ने मुआमला की तहकीक की तो कहा कि तुम्हारी शिकायत जाएज़ नहीं, तुम्हारे काम के हिसाब से मुआवज़ा मुनासिब मालूम होता है। उस पर अबू लूलू नाराज़ होकर चला गया। अगले दिल अबू लूलू फज्र की नमाज़ से पहले मस्जिद में जाकर छिप गया। जब सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० नमाज़ पढ़ाने लगे तो उसने कोने से निकल कर सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० पर दो धारी खंजर से छः वार किए। फिर दूसरे मुसलमानों को ज़ख्मी करता हुआ भागा, लेकिन पकड़ा गया। पकड़े जाते ही उसने उस खंजर से अपने पेट में भोंक लिया और वहीं मर गया।

सय्यदना उमर फारूक् रज़ि० शदीद ज़ख्मी हो गए थे। ऐसे में उन्होंने अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि० से दरयाफ्त कियाः "मुझ पर किसने हमला किया है?"

उन्हों ने बतायाः "मोगिरा बिन शोबा के गुलाम अबू लूलू फिरोज़ ने।"

यह सुन कर फरमाया।"अल्लाह का शुक्र है, मेरी मौत किसी ऐसे शख्स के हाथ से नहीं हो रही है जो इस्लाम का दावा करता हो।"

लोग आपको उठा कर घर लाए। तमाम लोग गम से निढाल थे। ऐसे में किसी ने आपसे कहाः "अमीरूल मोमिनीन अल्लाह की

अमीरूल मोमिनीन सय्यदना उमर फारूक रज़ि० की चन्द नसीहतें

☆ जिससे तुम्हें नफरत है उससे मोहतात भी रहो।

☆ जो खुद को जन्नती कहे वह जहन्नमी है।

☆ तौबा की तकलीफ़ से गुनाह छोड़ना आसान है।

☆ बुज़ुर्ग बनने के लिए इल्म हासिल करो।

☆ जो आदमी खुद को आलिम कहे वह जाहिल है।

☆ बुढ़ापे से पहले जवानी और मौत से पहले बुढ़ापे को गनीमत समझो।

☆ सलामती गुमनामी में है।

☆ कम बोलना दानाइ, कम खाना सेहत, कम सोना इबादत और आम लोगों से कम मिलना आफियत है।

☆ सबसे बुरी आवाज़े दो हैं। नवहा और राग।

☆ बुरा चाहने वाले की दोस्ती से परहेज़ करना ज़रूरी है।

☆ जो ऐब से आगाह करे वह दोस्त है और जो ऐब पर तारीफ करे व ऐसा है जैसे दूसरे को ज़बह कर रहा हो।

☆☆☆